प्राक्कथन

आधुनिक काल मे सूर्यबाला का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। सूर्यबाला समकालीन हिन्दी साहित्य में एक जाना-माना नाम है तथा सशक्त साहित्यकारों में उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। सूर्यबाला द्वारा रचित साहित्य के अंतर्गत लेखिका ने उपन्यास, कहानी, व्यंग्य एवं बाल साहित्य में भी अपनी लेखिनी का जादू चलाया है। मेरा मुख्य उद्देश्य सूर्यबाला द्वारा रचित गद्य साहित्य को ध्यान में रखते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना है।

प्राथमिक और मध्यमिक शिक्षा के समय से ही मुझे हिन्दी भाषा के प्रति विशेष लगाव एवं रुचि रही है। इसका एक कारण यह भी है की मेरी शिक्षा का माध्यम भी हिन्दी ही था । मैंने अपने अथक परिश्रम से आज तक हिन्दी साहित्य के प्रति अपने लगाव एवं रुचि को बरकरार रखा है। साहित्य मानव समाज का दर्पण होता है। साहित्य का मानव समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। साहित्य की विधाओं में बच्चों से लेकर बड़े, वृद्धों के मन को चुम्बकीय गुणो से बाँध रखने वाली विधा कथा साहित्य है। सूर्यबालाजी मुझे एक ऐसे कथाकारों में लगीं जिनकी कहानियों, उपन्यासों ने मेरे अन्तर्मन पर गहरा प्रभाव डाला । उनकी कहानियाँ, उपन्यास आधुनिक जीवन से प्रेरित और आधारित हैं। वे अपने साहित्य में नारी पात्रों को निरीह और लाचार दिखाने में विश्वास नहीं करतीं और इसी कारणवश मै सूर्यबाला के गद्य साहित्य एक अध्ययन रही हूँ।

मैं "सूर्यबाला का गद्य साहित्य: एक अध्ययन" शीर्षक को केंद्र स्थान में रखकर शोध कार्य करना चाहती हूं। मैं आशा करती हूं कि मेरे माता- पिता, शोध निर्देशक, समस्त गुरुजनों के आशीर्वाद एवं निर्देश, सलाह, सूचन से यह शोधकार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कर सकूँगी।

अध्ययन सामाग्री इस शोध प्रबंध से पूर्व कोल्हापुर के श्री सुनील बेंद्रे जी ने (1)"सूर्यबाला के कहानियो का अनुशीलन" शीर्षक के अंतर्गत शिवाजी विश्वविद्यालय से शोधकार्य किया है । उनका शोध प्रबंध सन 1999 में प्रक्ष में आया। दूसरा शोध प्रबंध डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय से बलवंत बालासाहेब शिवाजी ने (2) "सूर्यबाला के कथासाहित्य में नारी के विविध रूप" इस विषय पर शोध प्रबंध सन 2011 में प्रकाशित किया। तीसरा शोध प्रबंध श्रीमती सपना सवाईकर गोवा विश्वविध्यालय से शीर्षक (3)"सूर्यबाला का कथा साहित्य :सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य "को 2047 में शोध प्रबंध प्रकाशित किया गया ।

गद्य साहित्य में जिन महिलाओं साहित्यकारों ने योगदान दिया है उनमें हैं- सत्यवती मलिक, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, रजनी पनिकर, उषा प्रियंवदा आदि महिला साहित्यकारों का समावेश प्रमुख रूप से किया जा सकता है। इस युग के महिला साहित्यकारों ने अपने साहित्य में समाज परिवार में व्याप्त समस्याओं को उजागर किया है। उनका साहित्य वैविध्यपूर्ण है। उन्होने हर विधा में अपनी लेखनी चलाई है। उनमें उपन्यास, कहानी, व्यंग्य और बाल-साहित्य मुख्य हैं।

सूर्यबालाजी ने अपने उपन्यासों व कहानियों में कई तरह की समस्याओं का निरूपण परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप में किया है। इन समस्याओं के अंतर्गत सामाजिक समस्याएँ, महानगरीय समस्याएँ तथा मूल्य विघटन की समस्याएँ एवं कई प्रकार की अन्य समस्याओं का चित्रण सूर्यबालाजी ने किया है। अतः उनके गद्य साहित्य को केंद्र में रखते हुए इन समस्याओं का अध्ययन करना मेरा उदेश्य रहेगा।

मै अपने शोध प्रबंध "सूर्यबाला का गद्य साहित्य:एक अध्ययन" परम वंदनीय सूर्यबाला जी का आभार व्यक्त करती हूँ कि उन्होंने मुझे इस विषय संबधित अध्ययन करने की अनुमति प्रेरणा सहित प्रदान की जिसके लिए मैं आजीवन उनकी आभारी रहूँगी।